स्त्री अस्मिता और उसकी शिक्षा के बदलते प्रतिमान : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

अनिता कुमारी [1] |प्रोफेसर प्रताप सिंह राणा [2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर.

[2] डीन, शिक्षा संकाय, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर.

ABSTRACT:

भारतीय सभ्यता के इतिहास में नारी की शिक्षा और उसकी दशा जानने का विषय बन गई है क्योंकि उसे उपेक्षित किया गया ,संस्कृति और संस्कार की आड़ में। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से भारतीय नारी को एक गवाक्ष मिला है उससे नीर क्षीर विवेक के साथ लागू करने का योगक्षेम नीति 2020 के द्वारा मिल रहा है। नारी भारतीय समाज की सहधर्मिणी है,उसकी उपेक्षा कैसे की जा सकती है। धर्म परायण नारी, संस्कारी नारी, से अब सहकर्मी नारी की नई तश्वीर उभरकर आई है ,उसमे लगभग 2500 साल लग गये। शिक्षा के बदलते प्रतिमान में नारी के लिये स्वर्णयुग वैदिक काल के बाद 1950 में आजादी के युग से आता है। 1950 के बाद भारतीय सविधान द्वारा महिलाये बराबरी का दर्जा प्राप्त कर रही है। धार्मिक संस्कार और संस्कृति की आड़ में नारी को मनोवैज्ञानिक रूप से पराधीन कर दिया। मध्यकाल में राजा अपने साम्राज्य और राज्य की राजनितिक वृद्दि में लगा रहा। इसीलिए भारतीय नारी ने कभी युद्वो के आगे जौहर किया तो कभी सती किया और आगे बढ़ी तो पर्दे या घूघंट में लिपटी रही। भारत में मध्यवर्ग को नहीं उपज सका जिसके कारण देश को बौद्दिक धरातल नहीं मिलाने से औपनिवेश का शिकारी बन गया। दकियानूसी समाज ने नारी को भी कोई महत्व दिया ही नहीं। संघर्षपूर्ण वैचारिक चिन्तन में नारी की स्थिति एवं शिक्षा व्यवस्था, स्थिति का स्वरूप निरन्तर बदलते हुए काल के अधीन रही। इसलिए नई नीति 2020 से यह उम्मीद जगी है कि मातृत्व प्रधानता अब नारी को चाहिए ही नहीं ,उसे केवल और केवल बराबरी या समानता चाहिए और वो भी भारतीय नारी की समानता न कि पश्चिमी समाज वाली समानता।

KEYWORDS:

नारी शिक्षा, सहधर्मिणी, योगक्षेम, नारी समानता, वैचारिक चिन्तन, मातृत्व प्रधानता।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th March 2025	31st March 2025

प्रस्तावना-

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में नारी शिक्षा और उसकी दशा एक पढ़ने का विषय है,इससे बड़ा दुर्भाग्य नारी के लिए और क्या हो सकता है| फिर भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से भारतीय ज्ञान परम्परा को एक नया आयाम मिला है, उसके आलोक में भारतीय नारी को भी एक गवाक्ष मिला है, जिससे हमारे सनातन मूल्यों एव प्रज्ञा में प्रांजल प्रवाह के साथ भारतीय राष्ट्र की आत्मा(चिति) विराट रूप, दृश्यमान सत्ता, विकाश पुंज, युगानुकुल संजीविनी. नीर क्षीर विवेक के साथ यह योगक्षेम के साथ उपस्थित करता है कि भारतीय नारी को अब अपने बदले स्वरूप में समाज में स्थान मिलेगा और नारियां भी सामाजिक सम्मान के साथ बराबरी का जीवन जी सकेंगी। भारतीय सभ्यता, संस्कृति में नारी ने इतने झंझावतो को झेला है कि वह अपने को पराधीन समझाने लगी थी। शिक्षा ही संस्कृति को संरक्षित, संचरित एवं व्यवस्थित करती है तो दूसरी ओर समाज की शिक्षा पर उसकी संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। अतः दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। ऐसे में नारी शिक्षा एवं भारतीय समाज की संपूर्ण जीवन पद्धति हमारी नीति, धर्म, आदर्श, मूल्य, विश्वास हमारे संस्कारों का प्रतिफल है जिसे विरासत के रूप में सहेजने का पुनीत कार्य शिक्षा एवं शिक्षक करते हैं। अब नारी भारतीय समाज की सहधर्मिणी बन चुकी है, इस दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा की ओर भारतीय शिक्षाशास्त्री, आमलोगो का जो रुझान हुआ है , उससे एक नई उर्जा का संचार हुआ है, उससे स्त्री शिक्षा में वृद्दि हो रही है।

स्त्री अस्मिता और उसकी शिक्षा के बदलते प्रतिमान

आज हम सब बड़े गर्व से कहते हैं कि भारत विश्व गुरु था ,तो इसके पीछे हमारी सांस्कृतिक गौरव गाथा है। इस संस्कृति के समक्ष अनेकानेक झंझावते आई एवं गई फिर भी इसमें अपना अस्तित्व बनाए रखा। यही हमारी भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति नारी शक्ति है[1]। भारतीय संस्कृति के रक्षण का सबसे बड़ा आधार रहा है इसकी धर्म परायण नारी, अर्थात इस संस्कृति में नारी को दो तरह से अपनी अस्मिता सिद्ध करनी पड़ी,पहले यह की वह घर गृहस्थी तक सीमित कर दी गई, दूसरे उस पर धार्मिक संस्कार लाद दिए गए। इन दोनों ने भरतीय नारी को मनोवैज्ञानिक रूप से पराधीन कर दिया। प्राचीनकालीन नारी का उज्जवल इतिहास अब केवल किताबो की चीज बनकर रह गया। मध्यकाल में शासक वर्ग ने बहुत थोड़ी सी कोशिश की वह भी नमी गिरामी राजाओ जैसे अकबर वगैरह ने, बाकी ने केवल उपभोग किया। रजिया, नूरजहाँ, इत्यादि केवल इक्का, दुक्का उदहारण से पूरी नारी जाति को नहीं मापा जा सकता। जहाँ दुनिया में रोम, बर्लिन, मास्को, शिकागो, न्यूयार्क, कुस्तुन्तुनिया, ब्रिटेन जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना करके शिक्षा दीक्षा देकर लोकतंत्र की नींव रख रहा था, उसके माध्यम से नारी दशा में भी सुधार हो रहे थे, वही भारत का राजा अपने 600 वर्ष तक अपने साम्राज्य के मगरूर में डूबा रहा। राजा अपने राज्य की राजनितिक वृद्दि में लगा रहा इसीलिए भारतीय नारी ने कभी युद्वो के आगे जौहर किया तो कभी सती किया और आगे बढ़ी तो पर्दे या घूघंट में लिपटी रही।इसके परिणाम स्वरूप भारत मध्यवर्ग को नहीं उपजा सका और जिस भी देश में मध्यवर्ग नहीं बन सका, वही देश औपनिवेश के शिकारी बने और इनकी राजनितिक महत्वाकांक्षा गुलाम हो गई और इसी के साथ सामाजिक –सांस्कृतिक क्षेत्र की स्थिति स्थिर रह गई उसी में नारी को भी कोई महत्व दिया ही नहीं गया।

वस्तुतः उतर वैदिक काल से भारतीय नारी को नीचा दिखाया जाने लगा था। नारी शिक्षा को ही बदलकर उन्हें मानसिक गुलाम बना दिया गया और उसे भोग की वस्तु के रूप में परोसा गया। भारतीय चिन्तन धारा का ई.पू. 200से 200ई0 तक का काल धर्मशास्त्र युग के रूप में सिद्ध होता है। यह वह युग है जिसमें तर्क एवं तत्व ज्ञान की पर्याप्त प्रगति हुई एवं तथाकथित विदेशी म्लेच्छो (शक पहलव, कुषाण,यवन, ग्रीक) से भारत की संस्कृति का साक्षात्कार हुआ साथ ही देशी संस्कृति में नास्तिक विचार के रूप में बौद्ध, जैन चार्वाक की प्रगति हुई। यहाँ संघर्षपूर्ण वैचारिक चिन्तन उभरता है, कि नारी की स्थिति एवं शिक्षा व्यवस्था, स्थिति का स्वरूप निरन्तर बदलते हुए काल के अधीन रहा। महिला =महि (पृथ्वी) +ला (उत्पन्न) अर्थात् पृथ्वी की तरह उत्पन्न करने की शक्ति धारण करने वाली अब औरत= दूसरे के रत

(क्रिया) के रूप में रह गई।यह मध्यकालीन शब्द है। भारतीय वांङ्मय में उल्लेख नही है[2], यह कहना नारी शिक्षा से मुंह मोड़ना है। मत्स्य पुराण [3] में लिखा है की पत्नी को सुधरने के लिए बांस की छड़ी से एवं रस्सियों से उसे पीटा जा सकता है। महिलाओ को 'गृहपंजरकोकिला' अर्थात उनकी नजरबंदी का विवरण मिलाता है, मतलब घर से बहार जाकर शिक्षा नहीं ले सकती थी। पति के रहते हुए भी उसे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक अधिकारों से च्युत कर दिया गया और जब पति की मृत्यु हो गई तब तो उसको न रंगीन कपडे पहनने का अधिकार था और न कोई मांगलिक कार्य कर सकती थी। कमोवेश यही दशा 600 ई. पूर्व से लेकर 1900 ई. सन अर्थात 2500 वर्षो तक जो स्थिति नारी की बनी रही उसमे हस्तक्षेप करने की हिम्मत अंग्रेजो में भी नहीं रही।

ब्रिटिश शिक्षा के आने के बाद या यू कहे की ईसाई मिशनरियो ने भारतीय नारी की दशा को सुधारने का कार्य प्रारम्भ किया और इसमे तेजी तब आती है जब अंग्रेजी पढ़े लिखे भरतीयो ने खुद से इस दिशा में कार्य किया और भारत में सामाजिक सुधार आन्दोलन की वयार चली और भारतीय नारियो ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी सहभागिता की। 1920 से लेकर 1950 तक भारतीय नारियो का वर्ग आजादी में अपना योगदान देती है साथ में अपनी एक नई पहचान भी स्थापित करती है। 1950 से 2000 अर्थात पचास वर्षो में वह परिवर्तन होता है जो 2500 वर्षो में नहीं हुआ अर्थात नारी ने अपने राजनैतिक अधिकार सबसे पहले अर्जित किया फिर धीरे धीरे अब बराबरी के अधिकार की ओर आगे बढ़ रही है। 2000 से 2020 अर्थात मात्र बीस वर्षो में भारतीय नारी ने करीब करीब बराबरी के दर्जे को हासिल भी कर लिया है। अब जो शेष रह गया है वो है इस दर्जे को बनाये रखने हेतु नीतियों को लागू करते रहना। पढ़ी लिखी हर भारतीय अपने मातृत्व प्रधान समाज की ओर नहीं लौटना चाहती है। मातृत्व प्रधान या पितृत्व प्रधान यह अब चाहिए ही नहीं। अब 21 वी सदी की नारी आगे की सभी सदियों के लिए के लिए पीछे की ओर लौटना नहीं चाहती। मातृत्व प्रधान अब नारी को चाहिए ही नहीं, केवल और केवल बराबरी या समानता चाहिए और वो भी भारतीय नारी की समानता न कि पश्चिमी समाज वाली समानता। पश्चिमी समाज में नारी ने जो समानता पाई है वह उसके समाज के लिए उचित हो सकती है, भारतीय समाज के लिए वही नारी समानता उचित है जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप गरिमा और सम्मान की नारी का दर्जा है। इसी चीज के लिए भारतीय लडकियों को शिक्षा चाहिए की कही ये पुरुष लोग गरिमा और सम्मान तथा संस्कृति की आड़ में बराबरी के दर्जे को पुनः बदलने न पाये इसलिए भी लडकियों का शिक्षित होना जरुरी है ताकि उनके बराबरी के अधिकारों में कोई सेंधमारी न कर सके।

शिक्षा के बदलते प्रतिमानो का परिणाम

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय नारी की दशा एवं दिशा में जो परिवर्तन हुआ उसके कई आयाम है उनमे से चार आयामों पर विशेष रूप से ध्यान बरबस ही चला जाता है – 1-शिक्षा की प्रगति, 2- आर्थिक स्थिति में सुधार, 3- पारिवारिक उत्तरदायित्व के अवसर, 4- सामाजिक एवं राजनैतिक जागरूकता।

(1) शिक्षा की प्रगति - आजादी के बाद जिस भारत का निर्माण हुआ है उसमे स्त्री शिक्षा के प्रगति में अभूतपूर्व वृद्वि हुई है। नवीनतम जनगणना से जो स्थिति बनी है उसको नीचे के चित्र से देखा जा सकता है।एक तरफ मिड डे मिल के सहारे सरकारी प्राइमरी स्कूल चलते है तो वही प्राइवेट स्कूल में टाई बेल्ट के साथ ऊँची फीस के साथ हमारे बच्चे और बच्चियां पढ़ रही है। खैर जैसे भी है लडकियों की पढाई तो होने ही लगी है, जिसके लिए हजारो सालो से ये बराबरी का दर्जा नहीं मिल पाया था।

1950 से लेकर अब तक केवल प्राथमिक शालाओ की संख्या में लगभग चार गुनी वृद्वि हो चुकी है और उसमे दर्ज छात्रो की संख्या में लगभग 6 गुनी वृद्वि हुई तो वही इन शालाओ में पढ़ने वाली बालिकाओ में 10 गुनी वृद्वि हुई है [4]।राष्ट्रीय जनगणना सर्वेक्षण में देश के सभी 28 राज्यों और 7 केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल किया गया, जिनमें 640 जिले, 497 शहर, 5767 तहसील और 6 लाख से अधिक गाँव शामिल थे [5]। भारतीय जनसंख्या जनगणना 2011 ने सर्वेक्षण के दौरान कई मापदंडों को कवर किया। इन मापदंडों में जनसंख्या , जनसंख्या में वृद्धि दर, साक्षरता की दर, जनसंख्या का घनत्व, लिंग अनुपात और बाल लिंग अनुपात (0-6 वर्ष) शामिल हैं। https://censusindia.gov.in इस बेबसाइट पर इतनी वृहद् जानकारी दी गई है, उसमे से प्रत्येक राज्य और जिले, तहसील, ब्लाक स्तर से लेकर गाँव –गाँव तक की का हैंडबुक की जानकारी दी गई है । इसलिये डिजिटल युग में घर बैठे डेटा एवं संसाधन टैब पर जाकर हर तरह की जानकारी ली जा सकती है । डेटा एवं संसाधन टैब के विसुअलिसन सब टैब पर राज्य, जिला सर्च करके लिंग, आयु के अनुरूप भी आप अपने सम्बन्धित जिले की स्थिति को देखा जा सकता है । अब एक और विशेष बात डेटा संसाधन टैब के जनसंख्या खोजक सब टैब में अपने गाँव –गाँव, शहर –शहर के स्त्री –पुरुष के आंकड़े में मैंने अपनी क्षमतानुसार अध्ययन किया, तो मिला कि उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की मडियाहू तहसील के रामनगर ब्लाक के छांगापुर गाँव की कुल आबादी 1752 है, उनमे से 832 पुरुष और 920 महिलाएं है । बात इतनी नहीं है ,मूल बात यह है कि 0 से 6 वर्ष की आयु की महिला पुरुष बच्चो की संख्या 125-125 बराबर बराबर है । और स्कूल लगभग लगभग सभी बच्चे जाते है, कुछ सरकारी प्राइमरी स्कूल तो कुछ प्राइवेट स्कूल में जाते ही जाते है और 100 प्रतिशत नामांकन है। काश यही स्थिति भारत के सभी गाँवो और जिलो फिर राज्यों की हो जाए तो आगे आने वाले दस सालो में बराबरी के लिए महिलाओ को झेंपना नहीं पड़ेगा।

(2) आर्थिक स्थिति में सुधार – आजादी के बाद भारतीय महिलाओ की आर्थिक हालत में इस रूप में उतना परिवर्तन हुआ जितना की विगत डॉ हजार सालो में भी नहीं हुआ ,वह यह कि सरकारी नौकरी में भारतीय महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ी और लगभग –लगभग सभी राज्यों की प्राथमिक शिक्षा में 50 प्रतिशत पदो पर इनकी नियुक्ति होने लगी है । जब प्रारम्भिक स्तर पर यह सुधार हो गया तो नींव मजबूत हो जा रही है। अभी तक केवल निम्न आर्थिक परिवारों की स्त्रियाँ घरेलू आर्थिक क्रिया कलापों में भाग लेती थी, परन्तु अब सभी घरो की स्त्रियाँ घर से बहार जाने लगी है। खासकर सरकारी नौकरी करने वाली लडकियों को घर परिवार रिश्तेदार सभी से सम्मान मिलाने लगा है। भारतीय नारी इसी सम्मान के लिए तरसती रह गई थी प्रतिशत अध्यापक, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, मनोरंजन, और उद्योग, इंजीनियरिंग और उससे भी बढ़कर प्रशासनिक सेवा में उनकी भागीदारी ने नारी की दशा एवं दिशा में बदलाव कर दिया। शिक्षा के पायदानों का प्रतिशत 2011 की जनगणना 65.46 रहा लेकिन राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण[6] 2023 -24 (National Sample Survey Office) के मुताबिक 81 प्रतिशत महिला साक्षरता हो गई। इस तरह सामाजिक,आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भूमिका में परिवर्तन आ चुका है[7]।

(3) पारिवारिक उत्तरदायित्व के अवसर- पारिवारिक विघटन भले ही एक सामाजिक विसंगति हो लेकिन एकल परिवारों की अवधारणा ने महिलाओ का इस रूप में भला किया कि इससे अब केवल निर्णय घर की बूढी औरते ही नहीं करेगी अपितु एकल परिवार की वह नारी गृह –प्रबन्धक के रूप में हो गई । यदि नौकरी नहीं करती तो भी वह अब अपने पति के साथ भागीदार बन गई। 1990 के दशक तक प्रेम विवाह स्वीकार नहीं किया जाता था, वही 2020 के दशक तक आते –आते दूरसंचार क्रांति से भारतीय समाज में इतना तेजी से परिवर्तन हो गया कि अब प्रेम विवाह, कोर्ट मैरेज, यहाँ तक कि अंतरजातीय विवाह को भी

बे मन से ही सही सभी लोग स्वीकार करने लगे है। केवल संस्कार के द्वारा ही इन चीजों को रोक पाते है। यह एक समाजशस्त्रीय विवेचन है कि भारत के अनुरूप क्या सही है क्या गलत। मेरा आशय केवल इतना है कि पारिवारिक उत्तरदायित्व तो आखिरकार नारी को ही निभाना पड़ता है। क्योकि माँ बनने का सुख एक नारी को ही मिलता है। भारतीय नारी इसे बखूबी निभाती भी है। अतः पढ़ी –लिखी और कमाऊं पत्नियाँ (नारियां भी) समाज में प्रतिष्ठा का स्वरूप प्राप्त कर चुकी हैं[8]।

(4) सामाजिक एवं राजनैतिक जागरूकता- जब पहली बार 1919 ब्रिटिश भारत में महिलाओ को राजनितिक भागीदारी की बात की गई, परन्तु सीमित सफलता के साथ 1937 में महिलाओ को राजनैतिक अधिकार मिले। सही मायने में भारतीय संविधान ने नारी गरिमा और सम्मान के साथ स्थान दिया और अब वह बराबरी के साथ अपने अधिकारों का उपयोग करने लगी। पंचायती चुनाव अधिनियम 1992-93 से महिलाओ को 33 प्रतिशत आरक्षण मिल जाने के बाद राष्ट्रीय और राज्य की राजनीति में 33 प्रतिशत आरक्षण की मांग भी होने लगी, जिसकी पूर्ति भी 2023 में महिला आरक्षण अधिनियम [9] को जिसे नारी शक्ति वंदन अधिनियम भी कहते हैं , लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई (33%) सीटें आरक्षित करता है। इस संविधान संशोधन (106वें संशोधन) को सितंबर 2023 में पारित किया गया था, और यह अगली जनगणना और परिसीमन के बाद लागू होगा। प्रस्तावित विधेयक में 33% महिला आरक्षण को 15 वर्षों तक जारी रखने की बात कही गई है। इसके अतिरिक्त , इसमें संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए निर्धारित आरक्षित सीटों में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए एक कोटा निर्धारित करने का भी प्रावधान है। अर्थात इस पहल से भारतीय नारी की राजनितिक भागीदारी स्वतः बढ़ जा रही है । हलांकि 2006 के पंचायती राज अधिनियम[10] के अनुसार अब पंचायतो में 50 प्रतिशत आरक्षण हो गया, इसलिए संसद व् विधानसभाओ में भी 50 प्रतिशत आरक्षण हो जाए तो पूरी तरह की बराबरी हो जाएगी । 17वीं लोकसभा के कुल सदस्यों में 78 महिला सांसद (15% महिलाएं) हैं, जबकि राज्य विधानसभाओं में महिलाएं कुल सदस्यों का औसतन 9% हैं। वही 18वीं वर्तमान संसद में 74 महिला सांसद (14% महिलाएं) है । यदि आरक्षण को पूरी तरह लागू कर दिया जायेगा तो तस्वीर और भी बदल जाएगी। खैर राजनीति में चाहे जो भी भागीदारी रहे, अब सभी क्षेत्रो में बराबरी के करीब महिलाये पहुचने ही वाली है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नारी शिक्षा- राष्ट्रीय शिक्षा नीति[11] 2020 में समतामूलक भारतीय समाज का भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। इस नीति के लागू हो जाने के बाद भारतीय राष्ट्र एवं भारतीय समाज अग्रसर होगा तो उसमे नारी का पक्ष मजबूत हुआ है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझावों, प्रस्तावों की समीक्षा एवं उसके प्रभावों का आंकलन करना समीचीन प्रतीत होता है। नीति के अध्याय 6 में कुल 20 उपखंडों में समतामूलक समाज के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्रस्तुत किया गया है, जिसकी न केवल इसमे चर्चा की गई है अपितु समता एवं समावेशन का उपाय भी दिया गया है। इसमे स्कूलों में नामांकन में गिरावट के विशेष क्षेत्र सामाजिक –आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एस. ई. डी.जी.) में विशेषकर महिला विद्यार्थियों के सन्दर्भ को नीति के अनुवर्ती उपखंडों में दर्शाया गया है। यह शिक्षा नीति भारतीय नागरिक जनों, समूहों, समुदायों, लिंग, जन्म, जाति, पंथ, सम्प्रदाय, क्षेत्र, स्थान इत्यादि के आधार पर मौजूद विभेदक परिस्थितियों, अंतरालो, असमानताओ को दूर करने एवं सभी के लिए समान अवसर प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष:- भारतीय सभ्यता के इतिहास में नारी की शिक्षा और उसकी दशा कल के अधीन रही। वैदिक कल के बाद उसका उज्जवल भविष्य गयाग हो गया उत्तर वैदिक कल में थोड़ी सी दशा बिगड़ी परन्तु उसके बाद नारी को सभ्यता, संस्कार के नाम से पराधीन कर दिया गया। भारतीय सभ्यता, संस्कृति में नारी ने इतने झंझावतो को झेला है कि वह अपने को पराधीन समझाने लगी थी। बौद्ध, जैन चार्वाक की प्रगति हुई। यहाँ संघर्षपूर्ण वैचारिक चिन्तन उभरता है, परन्तु मध्यकाल में शासक वर्ग ने केवल उपभोग किया। जहाँ दुनिया में रोम, बर्निल, मास्को, शिकागो, न्यूयार्क, कुस्तुन्तुनिया, ब्रिटेन जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना करके शिक्षा दीक्षा देकर लोकतंत्र की नींव रख रहा था, उसके माध्यम से नारी दशा में भी सुधार हो रहे थे, वही भारत का राजा अपने 600 वर्ष तक अपने साम्राज्य के मगरूर में डूबा रहा। भारतीय नारी ने कभी युद्धो के आगे जौहर किया तो कभी सती किया और आगे बढ़ी तो पर्दे या घूघंट में लिपटी रही। 600 ई. पूर्व से लेकर 1900 ई सन अर्थात 2500 वर्षो तक जो स्थिति नारी की बनी रही उसमे हस्तक्षेप करने की हिम्मत अंग्रेजो में भी नहीं रही। ब्रिटिश शिक्षा के आने के बाद या यू कहे की ईसाई मिशनरियो ने भारतीय नारी की दशा को सुधारने का कार्य प्रारम्भ किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय नारी की दशा एवं दिशा में जो परिवर्तन हुआ उनमे से चार आयामों में मापा जा सकता है – 1-शिक्षा की प्रगति, 2-आर्थिक स्थिति में सुधार, 3-पारिवारिक उत्तरदायित्व के अवसर, 4-सामाजिक एवं राजनैतिक जागरूकता। इन सभी क्षेत्रो में महिलाओ ने बराबरी का दर्जा हासिल किया है और संविधान सम्मत यही स्थिति है और बनी भी रहनी चाहिए यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा शिक्षाशास्त्री, आमलोगो का जो रुझान हुआ है, उससे एक नई उर्जा का संचार हुआ है, उससे स्त्री शिक्षा में वृद्वि होती रहे।

REFERENCES

1. गुप्ता, एस, पी (2015), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 440.
2. **http://hd1.handle.net** 10603/382827,2021
3. मत्स्य पुराण – अध्याय 188, श्लोक 47
4. हनफी एंड हनफी –स्त्री शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ, 81.
5. राष्ट्रीय जनगणना सर्वेक्षण, 2011, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ,
6. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण 2023 -24 (National Sample Survey Office), भारत सरकार नई दिल्ली
7. Ministry of Statistics and Programme Implementation - Wikipedia
8. पाण्डेय, रामशकल एवं पूनम मदान (2016) समसामयिक भारत और शिक्षा), अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ, 65.
9. https://www.google.com/search?sca_esv=5c05e6a201bfb25d&sxsrf
10. https://panchayat.gov.in/
11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।